> कविता :

SUCCESS

> अखिलेश डेहरिया

सफलता

सफलता ऐसी कोई चीज नहीं
जो बनी बनाई मिलती है।
ये तो कलियों जैसी है
जो खिलती, फूलती और फलती है
कोई लाख जतन चाहे कर ले
सफलता हमेशा किस्तों में मिलती है।
आप क्यों अपनी परेशानियों पे रोते हैं
सफलता के दरवाजे हमेशा दीवारों पे
होते हैं।

★★★

वो कितना ख्याल रखती है मेरा, मेरे
हर ज़ख़्म पर नमक छिड़कती है
मेरे मरने के बाद शायद उसे रोने से
फुर्सत न मिले,
इसलिये मेरी आत्मा की शांति के लिये
अभी से मौन रखती है।

★★★

अंधे को मिल जाती है बटेर,
तो क्यों भूखा सो जाता है शेर
आम उगाना कठिन है
तो क्यों आसानी से उगते हैं बेर
शूल सज्जित है बबूल
तो क्यों शूल हीन है कनेर।

हे प्रभु नादान हूँ मैं बहक जाऊँगा
मुझे इन रिश्तों में न घेर
वक़्त लगे कोई बात नहीं
सुन लेना देर सबेर।

★★★

मेरे मन तू क्यों इतना उदास है
मेरे मन तू क्यों इतना उदास है
ये तेरी ज़िंदगी की सायं नहीं
अभी तो ये सुप्रभात है
मेरे मन तू क्यों इतना उदास है
खोल अपनी आँखें और देख
चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश है
मेरे मन तू क्यों इतना उदास है
उड़ जहाँ तक उड़ सकता है
तेरे लिये खुला ये आकाश है
मेरे मन तू क्यों इतना उदास है
पहुँचेगा तू भी मंज़िल तक
गर खुद पे तुझे विश्वास है
मेरे मन तू क्यों इतना उदास है
मत बाँध खुद को किसी दायरे में
पहुँच वहाँ जिसकी तुझे तलाश है
मेरे मन तू क्यों इतना उदास है
मिलेगी तुझे भी श्वाति बूंद
बुझेगी तेरी जो प्यास है
मेरे मन तू क्यों इतना उदास है।